

DELED Assignment Answer 504 HindiHelpguru
Assignment -1

“ बच्चे अपने वातावरण की सहायता से गणितीय ज्ञान को समझते हैं ” इस कथन के संदर्भ में प्राथमिक शिक्षक होने के नाते बच्चों द्वारा गणित ज्ञान के अर्जन में अपनाये जाने वाली युक्तियों का वर्णन कीजिये.

उत्तर :

गणित की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों की गणितिकरण की क्षमताओं का विकास करना है. जब बच्चों को को स्कूल में प्रवेश मिलता है, तो वे घर और परिवार और वातावरण से गणित की शिक्षा प्राप्त करके आते हैं. घर - परिवार में दिन-प्रतिदिन की घटनाओं और लेन-देन की गिनती वाली बुनियादी समझ उनको उपलब्ध हो जाती है। इस प्रकार का गणितीय ज्ञान किसी विशेष प्रक्रिया के बिना हासिल किया जाता है। स्कूल में शिक्षक का काम, बच्चों द्वारा प्राप्त गणितीय ज्ञान का विस्तार करना है। इस प्रकार, गणित बच्चों के लिए कठिन विषय माना जाता है, लेकिन यह वास्तव में आसान है। बच्चों के साधनों को विकसित करना ताकि वह गणितीय ढंग से सोच सकें व तर्क कर सकें , मान्यताओं के तार्किक परिणाम निकल सकें और अमूर्त को समझ सकें.

उदाहरण: स्वाभाविक रूप से, बच्चों, समाज के पर्यावरण से सीखते हैं। हम पूछते हैं कि “ आप कितने भाई और बहन हैं?” वे शीघ्र ही जवाब देंगे कि "हम दो भाई और एक बहन हैं।" यह ज्ञान प्राप्त करने के लिए किसी शिक्षण पद्धति या प्रक्रिया का समर्थन नहीं करता। हालांकि, यह ऐसे सामान्य व्यवहारों और वातावरण से सीखता है। इसका मतलब है कि गणित व्याख्यान विधि का विषय नहीं है। गणित, गणितीय लेनदेन के व्यवहारिक वातावरण के आधार पर सिखाया जा सकता है।

एक शिक्षक होने के नाते, आपको गणित को अधिक सक्रिय और दिलचस्प बनाने की कोशिश करनी चाहिए। बच्चे उन चीजों या गतिविधियों से जल्दी सीखते हैं जो उन्हें अधिक रुचि और आनंद दे। कक्षा कक्ष के वातावरण को ऐसा बनाना चाहिए की बच्चे गणित से भयभीत होने की बजाए उसका आनंद उठाए। सहजता से बच्चे के साधनों को विकसित करना ताकि वह गणितीय ढंग से सोच सके व तर्क कर सके , मान्यताओं के तार्किक परिणाम निकल सके और अमूर्त को समझ सके .

गणित शिक्षण की युक्तियाँ

जिस ढंग से शिक्षक शिक्षार्थी को ज्ञान प्रदान करता है उसे शिक्षण युक्तियों / विधि कहते हैं। “शिक्षण विधि” पद का प्रयोग बड़े व्यापक अर्थ में होता है। एक ओर तो इसके अंतर्गत अनेक प्रणालियाँ एवं योजनाएँ सम्मिलित की जाती हैं, दूसरी ओर शिक्षण की बहुत सी प्रक्रियाएँ भी सम्मिलित कर ली जाती हैं।

गणित शिक्षण की कुछ प्रमुख विधियां

1. आगमन विधि (Inductive Method)
2. निगमन विधि (Deductive Method)
3. विश्लेषण विधि (Analytical Method)
4. संश्लेषण विधि (Synthesis Method)
5. प्रयोगशाला विधि (Lab/ Laboratory Method)
6. अनुसंधान विधि (Heuristic Method)
7. समस्या समाधान विधि (Problem Solving Method)
8. प्रयोजन विधि (Project Method)
9. व्याख्यान विधि (Lecture Method)
10. विचार-विमर्श विधि (Discussion Method)

हम बात कर रहे हैं गणित के ज्ञान अर्जन की कुछ ऐसी युक्तियों के बारे में जिससे बच्चे गणित को सहजता से समझ सके. हमें ऐसा वातावरण निर्माण करना है की बच्चे गतिविधियाँ से सिखने लगे.

मूर्त वस्तुओं से अनुभव : आगमन विधि

बच्चे मूर्त वस्तुओं के साथ खेलने में मजा लेते हैं इसलिये कक्षा में पहले इनसे ही शुरुआत करनी चाहिये। चीजें एकत्र करके उनसे खेलने, उन्हें तरह-तरह से परखने का बच्चों को मौका दिया जाना चाहिये। इनकी मदद से छांटने, रंग पहचानने, जोड़ियाँ बनाने, क्रम को समझने जैसे काम करवाये जा सकते हैं। इस विधि में प्रत्यक्ष अनुभवों, उदाहरणों तथा प्रयोगों का अध्ययन कर नियम निकाले जाते हैं तथा ज्ञात तथ्यों के आधार पर उचित सूझ बुझ से निर्णय लिया जाता है।

गणितीय गतिविधियाँ :

बच्चों के साथ मिलकर मिट्टी के खिलौने, रेत और मिट्टी पर आकृतियाँ बनाई जा सकती हैं। मूर्त वस्तुओं के साथ खेलते या काम करते हुए बच्चों के साथ बातचीत करना या उनके अनुभव सुनना बहुत जरूरी है। अक्सर जब हम कक्षा में मूर्त वस्तुओं का प्रयोग करते हैं तो एक ही तरह की मूर्त वस्तु का उपयोग करते हैं, जबकि तरह-तरह की ठोस वस्तुओं के साथ काम करने से बच्चों की समझ अधिक पक्की होती है। हमें ऐसी गतिविधियाँ का निर्माण करना है जिससे आनंद के साथ ज्ञान अर्जन किया जाये।

क्रियाकलापों का निर्माण करना :

कई ऐसी घटनाएँ या क्रिया कलाप होते हैं जो गणितीय प्रक्रियाओं पर आधारित हैं। दैनिक जीवन की क्रियाकलापों में बच्चों को ऐसे अवसर मिलते हैं जिनमें गणित का समावेश होता है। और ऐसे क्रिया कलापों में बच्चों को सम्मिलित करना चाहिए। खेल खेलना, मिठाई बाँटकर खाना, कक्षा कक्षामें विभिन्न क्रियाकलापों को करने के लिए समूह बनाना जैसे कई उदाहरण हैं।

समस्या से समाधान :

बच्चों को उनकी वास्तविक समस्याओं को प्रसंग के अनुसार हल करके भी उनको गणितीय योग्यताओं और समझशक्ति को विकसित करने के लिए उनकी सहायता की जा सकती है। इस प्रकारकी विधि या अवधारणा को अन्य अर्थपूर्ण स्थितिओं में बच्चों के सन्मुख प्रदर्शित करने की आवश्यकता है। इससे बच्चे प्रासंगिक से अप्रासंगिक को अलग करने के लिए योग्य बनते हैं। अपने लिए विधि और अवधारणा के आवश्यक तत्व का सार निकालने के योग्य हो जाते हैं।

गणित अभिगम को आनंददायक बनाना :

बच्चे उन क्रियाकलापों से मूल गणितीय अवधारणाओं को सीखते और समझते हैं जिनसे उन्हें आनंद प्राप्त होता है। प्रत्येक बच्चा दूसरे बच्चों के साथ खेल खेलना चाहता है और ये खेल ही कई गणितीय अवधारणा को सीखने और समझने के लिए शायद बेहतर माध्यम हो सकते हैं। आप ऐसा कोई भी परिचित खेल ले सकते हैं जिसे बच्चे आनंदपूर्वक खेलते हैं। इस खेल में आप मामूली सुधार करके गणित की कुछ अवधारणाओं को समावेश करें ताकि बच्चे खेल-खेल में ही और मनोरंजक ढंग से इन अवधारणाओं को समझ और सीख सकें। इन प्रयासों के अतिरिक्त आप कुछ रूचि कर क्रियाकलापों की रचना करें जिससे विद्यार्थी गणितीय अवधारणाओं को आसानी से समझ सकें।

गणित अधिगम को आनंददायक बनाने के लिए, जब शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया चल रही होती है या विशेष रूप से जब गणित का शिक्षण किया जाता है तो कक्षा-कक्ष के वातावरण को विद्यार्थियों के अनुकूल बनाने की आवश्यकता होती है। कक्षा-कक्ष में बच्चों का बच्चों के साथ एवं बच्चों का अध्यापक के साथ, परस्पर क्रिया, स्वतंत्र एवं मनोरंजक होना अति आवश्यक है। ऐसा विश्वास और समानता का वातावरण चिंता एवं भय को दूर करने में सहायक होगा और गणित अधिगम को वास्तव में आनंददायक एवं ज्यादा अर्थपूर्ण तथा ज्यादा प्रभावकारी बनाता है।

 Internet Ki Short & Sweet Jankari Hindi Me
Hindi**H**elp**G**uru

अन्य प्रश्न के उत्तर पाने के लिए यहाँ क्लिक करे :

Download : [DELED Assignment 504](#)